प्रकाशन : 3/2015

बतख मछली सहपालन

प्रो. (डॉ.) बसन्त बैस
डॉ. सी. एस. ढाका

विविध पशुधन उत्पादक प्रणालियों को अपनाकर कृषि आय बढ़ाने के लिए प्रेरणा हेतु सजीव प्रदर्शन नमूनों की स्थापना

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

बतख मछली सहपालन के लाभ-

1. एक ही स्थान पर एक समय में बतख के माँस, अंडे एवं मछली का उत्पादन किया जा सकता है।
2. बतख अपने भोजन का 50–75% भाग जलीय खरपतवार, कीडे.–मकोडे., मोलस्क इत्यादि के रुप में तालाब से ही ले सकती है।
3. मछलियाँ बतख द्वारा बिखेरे गये भोजन को काम में ले सकती है एवं कुछ मछलियाँ सीधा बतखो की बीट को भी खा सकती है।
4. बतख जलीय पादपो के फैलने पर भी नियत्रंण रखती है।
5. बतख तालाब के पेंदे के कीचड. में चोंच मार कर पोषक तत्वों को तालाब के पानी में निकालते रहते है और तालाब की उत्पादकता बढ़ाते हैं।
6. बतख की बीट अच्छे उर्वरक का काम करती है जो कि मछलियों के भोजन जैसे कि फाइटोप्लेंक्टॉन एवं जूप्लेंक्टॉन के उत्पादन में सहायक होती है। इस प्रकार मछली पालन के लिए आवश्यक अतिरिक्त उर्वरक मिलाने की आवश्यकता नहीं होती। फलस्वरूप उर्वरक मिलाने के लिए आवश्यक खर्च एवं परिश्रम को भी कम किया जा सकता हैं।

बतख मछली सहपालन के लिए आवश्यक प्रबंधन व्यवस्थाएँ-

मछली पालन हेतु प्रबंधन -

1. स्थान का निर्धारणः– तालाब निर्माण हेतु स्थान निर्धारण करते समय सस्ती जमीन एवं प्रचुर मात्रा में स्वच्छ पानी की उपलब्धता पर मुख्य रुप से विचार किया जाना चाहिए। इसके अलावा अच्छी किस्म की मछलियों की उपलब्धता, मिट्टी की किस्म, पानी निकास की व्यवस्था,वातावरणीय कारक निर्माण के लिए आवश्यक लागत, मार्केटिंग आदि का भी ध्यान रखा जाना चाहिए।
2. तालाब निर्माणः– स्थान की उपलब्धता, व्यवसाय एवं अन्य उपलब्धताओं को ध्यान में रख कर तालाब निर्माण किया जाता हैं। तालाब के पेंदे का ढाल एक तरफ या केंद्र में

रखा जाना चाहिए ताकि उसे आवश्यकता पड़ने पर खाली किया जा सके। तालाब गोलाकार, अंडाकार, वर्गाकार, आयताकार किसी भी प्रकार का बनाया जा सकता है। तालाब में 2–2.5 मी. गहराई तक पानी भरा रहना चाहिए ।

वैज्ञानिक विधि से तैयार मछली फार्म मे तीन तरह के तालाब होते हैः–

1 नर्सरी (संवर्द्धन)तालाब :– इसका विस्तार 100–500 वर्ग मी. तथा गहराई 1–1.5 मी. हो सकती है। कुल उत्पादक क्षैत्र का यह 5% भाग होता है।

2 रियरिंग (पालन–पोषण) तालाब :– इसका विस्तार 500–1000 वर्ग मी. तथा गहराई 1.5–2.0 मी. हो सकती है। यह कुल उत्पादक क्षैत्र का 15% भाग होता है।

3 स्टोकिंग (सग्रंहण) तालाब :– इसका विस्तार 1000–2000 वर्ग मी. तथा गहराई 2.0–2.5 मी. तथा यह कुल उत्पादक क्षैत्र का 60–70% भाग हो सकता है। समय–समय पर तालाब के पानी को बदला जाना चाहिए। पानी की लवणता (7.5–8.0) को चुना मिलाकर सही किया जा सकता है। अवांछनीय जलीय खरपतवार, कीड़े–मकोड़े, अवांछनीय जलीय जीव एवं मछलियाँ समय–समय पर तालाब से निकाली जाना चाहिए वरना ये तालाब की उत्पादकता को कम करते है। पानी की सतह पर शैवाल की पैदावार को भी रोका जाना चाहिए।

3. भोजन प्रबंधनः– बतख मछली सहपालन में मछलियों के लिए अतिरिक्त भोजन की आवश्यकता नहीं रहती क्योंकि बतख की बीट तालाब की उर्वरता को बनाए रखती है जिससे मछली के भोजन फाइटोप्लेंक्टॉन एवं जूप्लेंक्टॉन अच्छी वृद्धि करते है। कुछ मछलियाँ बीट को ही खा लेती है। इसके अलावा शाकाहारी मछलियों के लिए विभिन्न प्रकार की घास भी खाने के लिए दी जा सकती है।
4. स्वास्थ्यः–नियमित रूप से मछलियों के स्वास्थ्य का ध्यान रखा जाना चाहिए। सामान्य व्यवहार से अलग व्यवहार दिखाई देने पर विशेषज्ञ से राय लेनी चाहिए।
5. मार्केटिंगः– 7–8 माह की मछलियाँ बाजार में बेची जा सकती है।

बतख पालन हेतु प्रबंधन-

1. बतख घर का निर्माणः– सहपालन में चूंकि बतख ज्यादातर समय तालाब में रहते हैं अतः विशेष आवास की आवश्यकता नहीं होती है। हालांकि रात्रि विश्राम के लिए बांस, लकड़ी इत्यादि की सहायता से बतखों के लिए आश्रय बनाया जा सकता है।
2. बतखों की संख्याः– मछली सहपालन हेतु 200–300 बतख प्रति हैक्टेयर (30–40 बतख प्रति बीघा) जलीय सतह के हिसाब से उपयुक्त है।

   3–4 महिने की बतख सहपालन हेतु रखी जा सकती है। परन्तु मछलियाँ जब तक 10–15 सेमी. लम्बी नहीं हो जाती तब तक बतख नहीं छोड़ी जाती।
3. भोजन प्रबंधनः– बतख अपना ज्यादातर भोजन तालाब में ही प्राप्त कर लेती है फिर भी अतिरिक्त भोजन की आवश्यकता होती है। इसके लिए मुर्गी पालन में काम आने

वाले भोजन का उपयोग सुबह–शाम किया जा सकता है। इसके अलावा कटी हुई हरी सब्जी भी खाने के लिए दी जा सकती है।

4. **अण्डे देना:–** बतख 7 महिने में अण्डे देना प्रारम्भ करती है। एक बतख प्रति वर्ष 90–100 अण्डे देती है। 18 महिने बाद अण्डे उत्पादन की क्षमता कम हो जाती है। अतः बाद में नयी बतख लायी जा सकती है। बतख घोंसले में अण्डे देना पसन्द करती है। अतः लकड़ी एवं बांस के घोंसले, जिनमे भूसा या घास बिछा हो, काम में लिये जा सकते हैं।

5. **स्वास्थ्य प्रबंधन:–** बतख मुर्गीयों की तुलना में कुछ ही बिमारियों के प्रति संवेदनशील होती है। बतखों में सभी वायरस जनित बिमारियों के प्रति टीकाकरण करना चाहिए। बीमार बतखों को स्वस्थ बतखों से अलग रखा जाना चाहिए।

बतख मछली सहपालन से उत्पादकता :– बतख मछली सहपालन से तालाब में एक बीघा जलीय क्षेत्रफल से एक वर्ष में 450–500 किलोग्राम मछली, 3000–3300 अण्डे एवं 30–33 किलोग्राम बतख माँस का उत्पादन किया जा सकता है।

–: तकनीकी मार्गदर्शन हेतु आभार :–

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत
कुलपति
राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

प्रो. बी. के. बेनीवाल
अधिष्ठाता
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर

प्रो. एस. सी. गोस्वामी
विभागाध्यक्ष, पशुधन उत्पादन एवं प्रबन्धन विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर

–:: सम्पर्क सूत्र ::–

प्रो. बसंत बैस
डॉ. सी. एस. ढाका (9414328437)
पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग, सी.वी.ए.एस., राजूवास, बीकानेर

Under CSA-RKVY-1(15) Project

Establishment of Live Demonstration Models of Diversified Livestock Production Systems For Motivating Adaption To Enhancing Agricultural Income

मुद्रक : डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, बीकानेर # 9784105819